RNI Reg. No. UPBIL/2001/6057
वर्ष 6 अंक 15
दिनांकः 1-15 अगस्त 2006 पाक्षिक
प्रकाशन स्थान – वाराणसी
पृष्ठ – 4
प्रो. एस. एन. त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन
(रजि. सं. 928/92-93) द्वारा
www.sntmf.org
संकलित एवं जनहित में प्रसारित
सहयोग राशि : रु 2/–

Medical News Letter

आयुर्विज्ञान बुलेटिन

भारत को रोग मुक्त करने का संकल्प

यह एक महत्वपूर्ण पत्र है। पढ़ने के बाद अपने मित्रों को भी दें

बालको में कृमि रोग | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में रेलवे आरक्षण केन्द्र | औषधीय फल बेल संधिवात | आकस्मिक चिकित्सा Tuberculosis | Prostate Cancer Brinjal

बालको में कृमि रोग

बाल्यावस्था के अर्न्तगत होने वाली व्याधियों में कृमि रोग एक प्रमुख व्याधि है। बालक की वृद्धि एवं विकास के लिए संतुलित पोषण आवश्यक है जिसमें प्रोटीन्स व विटामिन्स का प्रमुख स्थान है। कुपोषण (Malnutrution) के कारण जहां शिशु के शारीरिक व मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है वहीं सम्यक् पोषण होने पर आंत्रगत कृमियों (Intestinal Infesatations) के कारण शरीर को आवश्यक तत्व नहीं मिल पाते हैं। यदि बाल्यावस्था में ही सम्यक् पोषण विकास हो जाता है तो शेष अवस्था में स्वस्थ रहते हुए जीवन व्यतीत करता है। बालक के आहार में मधुर, मृदु, बृंहण, शीत आदि द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है जिसके कारण आमाशय में कृमियों की उत्पत्ति होती है। इसलिए चिकित्सक का ध्यान बालक की अन्य व्याधियों की चिकित्सा के साथ कृमि रोग पर भी आकृष्ट होती है।

आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र में 20 प्रकार के कृमि रोग बताये गये हैं कफज एवं पुरीषज कृमि को वस्तुतः आन्त्रगत कृमि (Intestinal Worms) माना गया है। कृमियों से मुख्यतः तीन प्रकार की व्याधियों होती हैं (1) जठरांत्र या पोषणज विकार (Gastro Intestinal Disorders) (2) पाण्डु या रक्ताल्पता (Anaemia) (3) कुष्ठ (Leprosy and other Dermatoses)

निदान (Etiology)– कृमिरोग को निदान की दृष्टि से दो वर्गो में बाँट सकते हैं–

(अ) आहार जन्य निदान :
1. मधुर अम्ल पदार्थो का सेवन।
2. द्रव बहुल पदार्थो का सेवन।
3. पिष्टमय पदार्थो का सेवन।
4. मिष्टान्न पदार्थो का सेवन
5. अर्जीण अवस्था में भी आहार ग्रहण करना।
6. मृत्तिका भक्षण

(अ) विहारजन्य निदान :
1. व्यायाम नहीं करना। 2. दिवाशयन।

सम्प्राप्ति (Pathogenesis) – आभ्यन्तर कृमि के निम्नलिखित दोष, दूष्य व अधिष्ठान हैं।

शेष पृष्ट–2 पर

Prostate Cancer

Prostate cancer is the second leading cause of cancer related deaths among men in the United States (1). It is a is a multi-step process involving progression from localized, low-grade lesions to large, high-grade, metastatic carcinomas. Molecular mechanism underlying onset or progression of prostate cancer involves age, race, diet, and androgen secretion and metabolism. Therapeutic options include surgery, radiation therapy, and hormonal therapy. Moreover, chemotherapy and radiation therapy are largely ineffective against advanced prostate cancer. Prostate cancer is usually diagnosed in the sixth or seventh decades of life, which allows a large window of opportunity for intervention to prevent or slow progression of the disease. Guggulsterone [4,17(20)-(cis)-pregnadiene-3,16-dione; is a plant sterol derived from the gum resin (guggulu) of the tree Commiphora mukul that has been used extensively in Indian Ayurvedic medicine for the treatment of different ailments, including bone fracture, arthritis, inflammation, cardiovascular disease, and lipid disorders (7–11). Recent studies have shown that guggulsterone is an antagonist of bile acid farnesoid X receptor,regulates cho

शेष पेज–4 पर

औषधीय फल बेल

बेल को 'बेलगीरि', 'बेलपत्थर', 'श्रीफल', तथा 'महाफल' के नाम से भी जाना जाता है। बेल का वैज्ञानिक नाम Aegle Marmelos है। बेल के वृक्ष के विषय में सामान्य रूप से यह माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति भारत में ही हुई थी। शायद यही कारण है कि बेल का वृक्ष देश के पतझड़ी तथा झाड़ीदार जंगल में जंगली रूप में उगता हुआ पाया जाता है। बेल के वृक्ष को शुभ माना जाता है तथा इसकी पत्तियों को भगवान शिव की पूजा के समय भेंट स्वरूप चढ़ाया जाता है। बेल म्यांमार तथा श्रीलंका के जंगलों में भी पाया जाता है तथा अफ्रीका, थाईलैण्ड मलेशिया इत्यादि में उगाया भी जाता है।

बेल का पेड़ लगभग दस–बारह मीटर की ऊँचाई तक बढ़ता है और इसकी शाखाओं पर मजबूत व नुकीले काँटे होते

शेष पेज–3 पर

आकास्मिक चिकित्सा–रैबीज

इस वायरस से होने वाला तीव्र औपसर्गिक रोग है जो पागल कुत्तों, बिल्ली, सियार, बंदर आदि के काटने से हो जाता है। वायु और कफ के विकृत हो जाने से इन जानवरों के धातुओं में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। हाइड्रोफोबिया से पीड़ित कुत्तों के काटने से मनुष्य में इसका वायरस लार के द्वारा संक्रमित हो जाता है। लारयुक्त मामूली खरोंच से भी वायरस का संक्रमण हो जाता है। यहाँ तक कि पागल कुत्ते ने यदि काट लिया हो तो भी सावधानी के लिय उपचार आवश्यक है। इसका विष तेजी से शरीर में फैलता है। काटने के एक वर्ष बाद तक भी रोग की उत्पत्ति हो सकती है।

पागल कुत्ते की पहचान यह है कि उसकी पूंछ, कंधे और जबड़े ढीले पड़कर लटक जाते है। लार निकलती रहती है। वह मुंह एक ओर टेढ़ा करके लटकाये रहता है। जो भी समाने आता है उसे काटने दौड़ता है। एक–दो दिन के बाद पिछले पैरों में पक्षाघात हो जाता है। बाद में गले आदि में पक्षाघात होता है और 6–7 दिन में वह मर जाता है। पागल कुत्ते को देखकर अन्य कुत्ते भूकते हैं तथा उससे दूर रहते हैं।

पागल कुत्ते से काटे गये व्यक्ति की केवल प्रतिषेधक चिकित्सा ही होती है। लक्षण प्रकट होने के दो से पांच दिन के भीतर मृत्यु भी हो सकती है। लक्षण–यदि पागल कुत्ते ने कभी काटा हो और रैबीज वैक्सीन का इंजेक्शन न लगाया गया हो तो कुछ समय बाद जल संत्रास का रोग आरम्भ हो जाता है। घाव में

शेष पेज–4 पर

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

Medical News Letter
आयुर्विज्ञान बुलेटिन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थिति रेलेवे आरक्षण केन्द्र

वर्तमान कुलपति द्वारा बहुप्रतीक्षित रेलवे आरक्षण केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में खुलवाना सराहनीय कार्य है। यदि अतीत में झाँके तो इस तरह की व्यवस्था प्रो० कालू लाल श्रीमाली जी के कार्यकाल में थी जो तमाम कठिनाइयों के चलते बन्द करनी पड़ी। यदि वही गलतिया फिर से दुहरायी गयी तो शायद फिर यह केन्द्र उसी गति को प्राप्त कर लेगा। अत: समय रहते इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पहला पक्ष विश्वविद्यालय के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्रों की वरीयता का है। अभी ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। जब नाम बी० एच० यू० आरक्षण सेन्टर हो तथा यहाँ के लोगों को कोई वरीयता न मिले तो स्वाभाविक रूप से एक आक्रोश मन में उत्पन्न होता है। जब यह आक्रोश छात्रों को होता है तो आक्रमक रूप लेता है क्योंकि युवा ही देश के किसी परिवर्तन के लिये जिम्मेदार होता है। इसके लिये इतिहास साक्षी है। यह बात आम है कि इमर्जेन्सी जैसी कड़ाई करके उनकी इच्छाओं को दबाया जाय परन्तु यह प्रथा लम्बे समय तक प्रभावी नहीं होती है। दूसरा पहलू भीड़–भाड़ के समय लगभग 12 बजे एक एकबार काउन्टर बहुधा बन्द रहता है जिससे और आक्रोश बढ़ जाता है इसकी जाँच करायी जानी चाहिये। तीसरी समस्या वहाँ पर कार पारकिंग से जुड़ी है। सामने रोड पर किसी के नाम पर अवैध कब्जा कर लिया गया है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं 40 वर्षो से उस मन्दिर के पास से गुजर रहा हूँ। न ही मैने उतनी बड़ी चाहरदिवारी देखी और नहीं दर्शनार्थियों की भीड़।

मेरा मानना है कि रेलवे–विश्वविद्यालय प्रशासन को बी० एच० यू० परिवार वालों की सुविधाओं का ध्यान देते हुये कुछ नयी व्यवस्था करनी चाहिये जिससे कि यहाँ के लोगों इस आरक्षण केन्द्र को अपना समझे तथा इसकी उन्नति एवं रक्षा के लिये तत्पर हो जाये। मैने ए० आई० आई० एम० एस० नई दिल्ली में भी ऐसा काउन्टर देखा है क्योंकि कई बार मै अपने पुत्र, जो वहाँ का एम० बी० बी० एस० का छात्र है के साथ रेलवे आरक्षण कराने गया। रोगियो की भीड़ थी। ओ० पी० डी० का पर्चा दिखाने पर ही उनका आरक्षण होता या परन्तु यदि AIIMS कोई छात्र या कर्मचारी वहाँ पहुचता है तो वह अलग लाइन में खड़ा होता है। इस प्रकार इस काउन्टर पर विश्वविद्यालय परिवार के लोगों को लग लाइन लगाकर आरक्षण की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। इसके लिये उनके परिचय पत्र या सील लगी Authority Letter को मान्यता दी जानी चाहिये तथा दोनों काउन्टर हमेशा चलते रहे इस पर भी ध्यान देना आवश्यक है। हर हाल में विश्वविद्यालय से जुड़ा व्यक्ति बाहरी नागरिकों से अलग प्रतीत होना चाहिये। उसका व्यवहार अलग दिखना चाहिये तथा उसे सुविधाये भी अलग मिलनी चाहिये। 1 प्रतिशत लोगों यदि इन सुविधाओं को गलत लाभ लेते है तो उन्हें चिन्हित करके दण्ड देना चाहिये क्योंकि इस गलती के नाम पर 9 प्रतिशत लोगों का उस लाभ से वंचित करने हेतु नियम बनाना चाहिये।

प्रो० यामिनी बी० त्रिपाठी

बालको में........

दोष–कफ दूष्य– रस, रक्त अधिष्ठान–कफज कृमि–अमाशय। पुरीषज कृमि– पक्वाशय। श्लेष्मा कर अधिकता से आमाशय में उत्पन्न होने वाले कफज कृमि वृद्धि को प्राप्त होकर के नीचे, ऊपर की ओर घूमते हें। उनमें से कुछ पृथुब्रह्म (चमड़े की मोटी तांत के समान) तथा कुछ गण्डूपद (केचुएँ) के समान मोटे होते हैं तथा कुछ नवांकुर धान्य के समान आकार वाले छोटे एवं सूक्ष्म होते हैं। इनका वर्ण श्वेत एवं ताम्राभ होता है। अन्त्राद, उदरावेष्ट, हृदयाद, महागुद, चुरू, दर्भकुसुम तथा सुगन्ध नामक सात प्रकार के होते हैं।

लाक्षणिक चिन्ह (Clinical Features) :

(अ) कृमि के सामान्य लक्षण–

ज्वरो विवर्णता शूलं हृद्रोग: सदनं भ्रम:।
भक्त द्वेषोऽतिसारश्च संजात क्रिमिलक्षणम्।।

(1) ज्वर (Fever), (2) विवर्णता (Discolo-uration of Skin), (3) उदरशूल (Abdominal Pain), (4) हृद्रोग (Heart Diseases), (5) अंगों में शिथिलता, (6) भ्रम (Vetigo), (7) अरुचि (Anorexia), (8) अतिसार (Diarrhoea)

(ब) आंत्रगत कृमि (कफज) के लक्षण :

हृल्लासमास्यस्रवणविपाकमरोचकम्। मूर्च्छाच्छार्दिज्वरानाहकार्श्य क्षवथुवीनसाम्।।

(अ० हृ० नि० 14/50)

(1) हृल्लास (Morning Sickness),
(2) लालास्राव (Secreation of Saliva),
(3) अजीर्ण (Indigestion),
(4) अरुची (Anorexia),
(5) मूर्च्छा (Syncope),
(6) छर्दि (Vomiting),
(7) ज्वर (Fever)

(स) मृत्तिकाभक्षणजन्य कृमि के लक्षण :

क्षनाक्षि कूटगण्डभ्रू: शूनयान्नाभिमेहन:।
कृमिकोष्ठोऽतिसार्येत मलं सासृककफान्वितम्।।

शेष अगले अंक में

Brinjal

Brinjal, also known as eggplant, is known by many names in Indian languages. Known as *Baingan* in Hindi, *Vangee* in Marathi, *Vankaya* in Telugu, *Kathirikai* in Tamil, *Vazhuthininga* in Malayalam and *Badane Kayi* in Kannada, this vegetable belongs to the family *solanaceae.*

Perennial plant : Though a perennial, brinjal is cultivated as an annual throughout India and North Africa.

The plant is a much branched, spiny at tainting, and grows to the height of 1 m. The stem is erect or spreading, woody at the base and herbaceous above. The leaves are simple, alternate, ovate 15 cm long with toothed margins and covered with woolly hair beneath. The fruits are solitary or in small cymes having deeply lobed and toothed calyx which is persistent, enlarging with the fruit.

शेष पेज–4 पर

Letter of Interest for
Propojed Project to DST

Popularizing Science in School going Children

Please contact :
Prof. Yamini Bhusan Tripathi
Department of Medicinal Chemistry
IMS, Banaras Hindu University, Varanasi-221005

सन्धिवात

अर्थराइटिस अथवा दूसरे शब्दों में ''जोड़ो की सूजन'' परन्तु सामान्यत 100 से अधिक बात रोग (गठिया) और उससे जुड़ी अवस्थायें जो कि दर्द, कठोरता, सूजन के लिये उत्तरदायी है। जोड़ों एवं संयोजी ऊतको में। सामान्यत: प्रयुक्त होने वाले रक्त जाँच जिससे रोग निदान व वात रोग प्रबन्धन में सहायता मिलती है–

1. सम्पूर्ण रक्त गणना (OBC) : अधिक श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या (5000–10000 से अधिक) ये दर्शाती है कि दाह होने का कारण सन्धिवात या गठिया है। यद्यपि संक्रमण, तनाव, व्यायाम एवं ठण्ड भी श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या को बढ़ा देती है।

2. एच० बी० : हीमेटोक्रिक (सामान्यत: 40–55 प्रतिशत

शेष पृष्ठ– 3 पर

पुस्तक दान

प्रो० एस० एन० त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन ने गरीब बच्चों को विभिन्न विषयों एवं पाठ्यक्रमों के लिए नि:शुल्क पुस्तक उपलब्ध कराने का निर्णय किया है। अत: आपसे अनुरोध है कि आप अपने बच्चों की पिछले कक्षाओं की पुस्तकों को दान के रूप में देने की कृपा करें। इनको ठीक करके मेले का आयोजन करके स्कूली छात्रों को दिया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र :

एस० एन० त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन, 71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी–221005

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

सन्धिवात........................

पुरूषों में व 36–48 प्रतिशत महिलाओं में) का कम होना भी कुछ कारकों के द्वारा जिनमें एनीमिया व गठिया भी होता है।

3. लाल रक्त कणिकाओं का जमना (ESR) : (एक घण्टे में RBC का बैठना), जब शरीर में दाह या सूजन होता है तो उससे रक्त में प्रोभूजिन (प्रोटीन) का निर्माण होने लगता है, जिससे लाल कणिकायें आपस में जूड़ने लगती है जो स्वास्थ्य रक्त कोशिकाओं की अपेक्षा जल्दी मृत होने लगती है। अत: सूजन व दाह, गठिया के अलावा अन्य कारणों से भी हो सकता है। ESR परीक्षण गठिया निदान का एकमात्र तरीका नहीं है।

4. सन्धिवात कारक (RA): यह एक प्रकार का एण्टीवाडी है जो कि गठिया के मरीजों में पाया जाता है। परीक्षण यदि बीमारी के प्रथम अवस्था में किया जाये तो सही पता नहीं चल पाता ।

5. प्रतिकेन्द्रक एण्टीबाडी (ANA) : कुछ मरीज जैसे कि गठिया (सन्धिवात) एवं लूपस (एक प्रकार का चर्म रोग) के मरीजो में एण्टीबाडी का निर्माण होता है जो कि केन्द्रको को भेजे जाते हैं। ये एण्टीबाडी प्रतिकेन्द्रक एण्टीबाडी कहलाते है। 95 प्रतिशत से ज्यादा लूपस के मरीज ANS test देते हैं।

सन्धिवात रोग के उपचार :

1. सन्धिवात समूह एवं व्यक्ति सहमति : सहयोगी समूह के द्वारा एक ऐसा वातावरण पैदा किया जाता है जिसके द्वारा आप बीमारियों से बचाव के नये तरीके सीख सकते है।
2. दर्द एवं थकावट से निवारण के लिये उपयोगी है एवं इसके द्वारा जोड़ों की संरचना एवं कार्यो को सुरक्षित किया जा सकता है।
3. भौतिक गतिविधियों कम करनी चाहिये क्योंकि दर्द और तकनीक आगे चलकर पेशीक्षय और मोटापा का कारण हो सकता है। तीन प्रकार के व्यायाम जैसे – गतिशील व्यायाम शक्तिवर्धक, निरन्तर व्यायाम आदि सन्धिवात रोग के लक्षणों से आराम दिलाते है तथा दोबारा जोडत्रों की हानि से बचाव करते हैं।
4. आयुर्वेद के पंचकर्म उपचार अय प्राकृतिक उपचार तथा अन्र्तध्यान भी कुछ हद तक लाभकारी हैं।
5. जीवन शैली व खाद्य–पान को बदलकर अग्नि का बढ़ाना भी लाभकारी होता है।
6. खिन्नचित्त अवस्था में, औषधि प्रयोग (शारीरिक बीमारियों में प्रयुक्त होने से)

मृत्युन्जय सिंह

Campus Mail Service

(One can pay from Project or Personal account)

Joint Today

Rs. 150/= per month
2 Pickups/ day
Organized by
BHU Telephone Director Committee
Contact : 230-7547
yaminiok@yahoo.com

TUBERCULOSIS

Nowadays, tuberculosis (TB) is becoming a worldwide problem. This contagious disease is transmitted through the air and it is caused by the bacterium Mycobacterium tuberculosis, which can attack different organs of human body. However, it most commonly affects the lungs, but it can also affect the central nervous system (meningitis), lymphatic system, circulatory system (Milary tuberculosis), genitourinary system, bones and joints. The common symptoms of this disease are prolonged cough, chest pain, hemoptysis, fever, chills, night sweats, appetite loss, weight loss, and easy fatigability. Considering TB problems, the World Health Organization declared this disease a global health emergency in 1993 [1]. According to statistics, one-third of the world's population is currently infected with the TB bacillus totaling up almost three million deaths each year. Further, about 8 Million people worldwide develop active TB and almost 3 million die in each year. According to a report, the TB-infected population at present is: 35% in Africa; 18% in America and 29% in Eastern Mediterranean countries, 15% Europe; 44% in South-east Asian countries and 35% in Western Pacific.

The current suite of antibiotics used to treat TB faces two main difficulties: (i) the emergence of multidrug-resistant (MDR) strains of M. tuberculosis, and (ii) the persistent state of the bacterium, which is less susceptible to antibiotics and causes very long antibiotic treatment regimes.

Mycobacterium tuberculosis is a major global pathogen whose threat has increased with the emergence of multidrug-resistant strains. In recent years, multidrug-resistant strains have emerged as a new threat in both developed and developing countries, and are strongly associated with mortality in AIDS patients.

Nowadays, there are 79% of MDR-TB resistant to at least three out of the four main drugs used to treat. The drugs normally used to treat MDR-TB are amikacin, capreomycin, ciprofloxacin, cycloserine, ethionamide, kanamycin, ofloxacin, *p*aminosalicylic acid and protionamide.

Multi-drug resistant tuberculosis strains are generally considered to be those strains, which are resistant to at least two drugs, such as INH and Rifampin. The frequency of resistance to multi drugs varies geographically, and acquired (secondary) resistance, which is more common than primary resistance. High rates of acquired MDR-TB have been reported in Nepal (48%), India (33.8%), and New York City (30%) in the early 1900s. MDR-TB strains could arise as a consequence of sequential accumulation of mutations, conferring resistance to single agents, or by a single step process such as acquisition of an MDR element. Some of these MDR isolates arise because random mutations in genes that encode targets for the individual anti microbial agents. They are selected by sub-therapeutic drug levels, which results from the treatment errors, poor adherence to treatment protocols, or other factors.

Prof. Y.B. Tripathi

औषधीय फल बेल............

हैं जो कई सेंटीमीटर लंबे तक होते है। कच्चे फल का रंग हरा होता है। फल पकने पर वह पीला हो जाता है। इसका छिलका बहुत कड़ा तथा मजबूत होता है। छिलके के अंदर हल्के पीले रंग का काफी मात्रा में लसदार पदार्थ (गूदा) होता है। इसमें बड़ी मात्रा में बीज भी होते हैं।

इसका उपयोग आयुर्वेद, यूनानी तथा घरेलू इलाज में काफी समय से होता रहा है। बेल की जड़, शाखाओं तथा पत्तियों में काफी मात्रा में 'टैनिन' होता है। फल में भी टैनिन तथा लसदार पदार्थ पाया जाता है। इसके अतिरिक्त 'एल्केलॉइड', 'स्टेरोल', 'कोउमारिन' तथा अन्य सुगंधित पदार्थ भी होते हैं जो वृक्ष के भिन्न–भिन्न भाग से प्राप्त किये जा सकते हैं। शोधकर्ताओं ने फल में एजेलिन (Aegelin) मार्मेलोसिन (Marmelosine), मार्मेलिन (Marmelin), लाईनोलिक अम्ल (Linoleic acid), लिगनान (Lignan) इत्यादि तत्वों की पहचान की है। इनमें मार्मेलोसिन बहुत महत्वपूर्ण है। यह पीड़ाहारी, ज्वरहारी तथा प्रदाहकहारी गुण रहता है। इन सभी रासयनिक पदार्थो की उपस्थिति के कारण ही बेल के वृक्ष में अनेक प्रकार के औषधीय गुण होते हें। यूनानी पद्धति के अनुसार बेल का स्वभाव गरम तथा शुष्क होता है। इस पद्धति के अनुसार कच्चे फल का गूदा दस्त, पेचिश, गठिया, गाअट इत्यादि के नियंत्रण में सहायक है। कच्चे फल के गुदा को सुखा कर अगर पीस लिया जाए और पीसे हुए चूर्ण को हल्दी के साथ मिलाकर गरम पानी के एक गिलास में थोड़ा घी डालकर पिया जाए तो हड्डी की चोट में बहुत लाभ होता है।

गूदे के सेवन से पाचन क्रिया में सुधार होता है। जिगर तथा हृदय को शक्ति मिलती है, आँत के फोड़े ठीक हो सकते हैं तथा पेट की अनेक बीमारियाँ जो कब्ज के कारण होती हैं, वह भी ठीक हो जाती हैं। बेल के गूदे का एक गुण यह भी है कि यह बहुत पौष्टिक होता है। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि पके हुए बेल का गूदा अत्यंत प्रभावी मृटुरेचक (Laxative) का काम करता है। जिन लोगों को पुराना पेचिश है या जो जियार्डिया (Giardias) से पीड़ित हैं तो उन्हें कुछ सप्ताह तक प्रत्येक दिन पाँच–छ: बड़े चम्मच पके हुए बेल का गूदा खाना चाहिए। पूरी सम्भावना है कि रोग सदैव के लिए चला जाएगा

बेल के विषय में यह भी धारणा है कि इसके सेवन से आयु बढ़ती है, आँखों की रोशनी में सुधार होता है तथा त्वचा में चकम एवं कसाव उत्पन्न होता है जिसके कारण बढ़ती आयु का प्रभाव कम दिखाई देता है। इन सभी गुणों के लिए अन्य रसायनों के अतिरिक्त टैनिन काफी हद तक सहायक होता है जो काफी मात्रा में बेल में पाया जाता है।

शेष पेज–4 पर

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

Kutaja Bilwa Syrup

Ingredients :

1. Kutaja (H. antidysenterica),
2. Bilwa (A. mermelos),
3. Mustak (C. rotundus),
4. Dadima (P. granatum),
5. Nag Kesar (M. ferrea),
6. Parsikyavani (H. nigar),
7. Dhanyaka (C. sativum).

Mode of Action : Kutaja Bilwa syrup & Bailo Kurchin are new concept of anti-protozoal therapy tablet. An effective herbal remedy for chronic & acute Amoebiasis, Giardiasis, Enteropathy and Colitis.

Dosage :
Adult : 2 TSF / 2 tabs Thrice daily,
Children : 1 TSF / 1 tabs Thrice daily.
or as directed by the Physician

Head Office : 71, Krishna Bagh, Nagwa,Varanasi-221005 (U.P.) INDIA,
Phone:542-2368885,2367855;
Telefax:542-2366566,
Email: suryaherbals@rediffmail.com
www.suryapharmaceuticals.com

Brinjal...............................

The fruit is smooth, glossy firm-fleshed, pendant berry up to 15 cm long. Usually ovoid, oblong in shape, it's colour ranges from white or yellow to deep purple or blackish or even striped. In the flesh of the fruit numerous small brown kidney-shaped seeds are embedded. Seeds are sown in the ground or seed pans and the seedlings are transplanted into fertile soil mixed with decomposed farm-yard manure and castor oil cake. Brinjal contains carbohydrates, protein, fats and some minerals. They are fairly good source of calcium, phosphorous, iron and Vitamin B. Brinjal is largely grown in our country and many other tropical countries where it is one of he principal vegetables made into chutney, bartha, sambar, pickle, fry or curry.

Chitra Radhakrishnan

Prostate Cancer.......................

lesterol homeostasis and also suppresses nuclear factor-Kapa B, atranscription factor involved in inflammation, apoptosis and free radical reactions. Thus several ayurvedic products of guggul may also be used in prevention and treatment of cancer.

Prof. Y.B. Tripathi

टैनिन काफी हद तक सहायक होता है जो..........................

गरमी के मौसम में पके हुए बेल के गूदे से शर्बत तैयार किया जाता है। शर्बत उन लोगों के लिये भी फायदेमंद है जिन्हें पेट की खराबी और कब्ज की शिकायत रहती है।

बेल का मुरब्बा बनाकर रख लेते हैं तथा इच्छानुसार जब चाहें उसका सेवन करते हैं।

बेल की पत्ती, बीज तथा फल से सुगंधित तेल भी निकाला जाता है जिसका उपयोग कई प्रकार की दवाई बनाने में होता है। शोध के आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि तेल अनेक प्रकार के जीवाणु तथा फफूंद को मार देता है। कई प्रकार के प्रोटोजोओ को भी वह तेल खत्म कर देता है।

बेल के वृक्ष की पत्तियों को थोड़ा गरम कर सूजे हुए अंग पर बाँधने से सूजन कम हो जाती है और दर्द भी जाता रहता है।

बेल की पत्ती तथा बीज का उपयोग मधुमेह के लिये किया जाता है। इसके लिए पत्ती का रस निचोड़ कर उसमें काली मिर्च की बुकनी मिला कर पीने से लाभ होता है।

दर्पण, जुलाई 2006

आकस्मिक चिकित्सा................................

का खून निकलता है। बेचैनी, चिन्ता तथा उत्तेजना होने लगती है। रोगी की प्रवृत्ति संघषपूर्ण तथा आक्रामक हो जाती है और वह अभद्र व्यवहार करने लगता है। पानी देखते ही डर लगता है। यह एक प्रधान लक्षण है। निगलने में कठिनाई होती है, लार बाहर गिरने लगता है। सिरदर्द होता है, नाड़ी की गति तेज हो जाती है। मुख, गले, कण्ठ की मांसपेशियों में स्तम्भ उत्पन्न हो जाता है। पानी गले से नीचे नहीं उतरता। मस्तिष्क और सुषुम्णा में इतनी असहनशीलता हो जाती है कि वायु के हल्के झोंके से भी दौरे पड़ने लगते हैं। श्वासगति तीव्र हो जाती है आवाज भद्दी और भूंकने जैसी हो जाती है।

ज्वर हो जाता है, शरीर में आपेक्ष आने लगते हैं। क्रमश: आक्षेप का दौरा जल्दी–जल्दी पड़ने लगता है। पेशियों में जड़ता, गतिराहित्य, दौरे पडत्रना, धुधला दिखायी पड़ना–ये लक्षण उत्पन्न होने पर बचना मुश्किल–सा हो जाता है।

उपचार–कुत्ते के काटने पर उसे मारना नहीं चाहिए। यह निश्चय करना आवश्यक है कि वह पागल है अथवा नहीं इसलिये उसका निरीक्षण करता रहे। पागल कुत्ता दस दिन में स्वयं मर जाता है। कटे स्थान पर तत्काल ऊपर की ओर रस्सी से कसकर बांधे। घाव का अच्छी तरह पानी से धोकर चीरा लगायें तथा पोटैशियम परमैगनेट के घोल से धोयें। इसमें कार्बोलिक एसिड या पोटैशियम परमैगनेट (लाल दवा) भर दें। जितनी हो सके रैबीज का इंजेक्शन लगवा लेना चाहिए। साथ ही टिटनेस का भी इंजेक्शन लगवायें, चाहे कुत्ता पागल हो अथवा नहीं। बंदर आदि के काटने पर भी यही करें। रोग की उत्पत्ति हो जाने पर बचाव मुश्किल हो जाता है। अत: चाहे घाव गहरा हो या नहीं सुरक्षात्मक उपचार के रूप में रैबीज का इंजेक्शन अवश्य लगवाना चाहिए। **प्रो० वाई. बी. त्रिपाठी**

आमन्त्रण

आर्युविज्ञान बुलेटिन में आप अपना स्वास्थ्य सम्बन्धी अनुभव एवं लेख भेजने की कृपा करें। गेस्ट एडिटर के रूप में इस पत्रिका के किसी एक अंक को प्रकाशित करने के लिए आप आमंत्रित है।

जैविक अन्न एवं सब्जियां

कीटनाशक दवाओं से मुक्त उत्पादित चावल/ गेहूँ छोटे–छोटे पैकेट में उपलब्ध हैं। अन्य घरेलू सामानो को उचित दामों पर होम डिलेवरी द्वारा पहुचाया जाता है।

सम्पर्क सूत्र :
मदन मोहन पाण्डेय, बृजइनक्लेव, सुन्दरपुर, वाराणसी

हमारी विज्ञापन दरें

- नगर आसपास के जिलों में मुफ्त प्रसार।
- व्यक्तिगत पामप्लेट प्रकाशन से भी सस्ता।
- 5 हजार प्रतियां मुफ्त वितरित होती हैं।

विज्ञापन के दर निम्न प्रकार हैं–

45/- प्रति कालम सेंटीमीटर (प्रथम पृष्ठ)
35/- प्रति कालम सेंटीमीटर
4500/- पूरा पेज
2500/- आधा पेज

वर्गीकृत विज्ञापन 16 शब्दों तक 60/- अतिरिक्त शब्द रू० 5/-

Medical News Letter
आयुर्विज्ञान बुलेटिन

प्रकाशक, मुद्रक मालिक
डा० प्रतिभा त्रिपाठी
मुद्रण स्थल–निष्पक्ष 'काबरा प्रेस'
सम्पादक : 'डा० यामिनी भूषण त्रिपाठी
कार्यालय : 1, गांधी नगर, नरिया, वाराणसी,
ई–मेल : ayurvigyanbull@yahoo.com

BOOK POST

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com